5. मिली बग (*सेकरीकोकस सैकारी*)

लक्षण / पहचान

- मिली बग का शरीर मुलायम तथा सफेद रंग की चूर्णी परत से ढका रहता है इस परत को "मिली" कहते हैं इसलिए इसे मिली बग कहते हैं। इस कीट की पाँच प्रजातियाँ गन्ने को नुकसान पहुंचाती है लेकिन मुख्य रूप से गुलाबी मिली बग ही गन्ने में लीफ सीथ के नीचे पाया जाता है।
- यह कीट अपने मुखांग द्वारा गन्ने की मुलायम पोरी का रस चूसते हैं।
- गन्ने में नेक्रोसिस (गलन) जैसे लक्षण दिखाई देने लगते हैं साथ ही मिली बग द्वारा ग्रसित गन्ने में कवकों द्वारा संक्रमण होने से काले धब्बे बन जाते हैं।

प्रबंधन

- अगस्त–अक्टूबर तक सूखी पत्तियों को निकालते रहें।
- प्रतिरोधी प्रजातियों को बोएँ।
- प्रभावित गन्ने के टुकड़ों को न बोएँ या बोने से पहले 72 घंटे तक टुकड़ों को पानी में डूबा के रखें।
- मोनोक्रोटोफास 36 एस एल 1.5 ली / है. की दर से 800 से 1000 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।

6. काला चिकटा (*केवेलेरियस स्वीटी तथा डाइमॉफेप्टिरस गिब्बस*)

लक्षण / पहचान

- यह ग्रीष्मकालीन महीनों के कीट है और इसकी दो प्रजातियाँ (*केवेलेरियस स्वीटी तथा डाइमॉफेप्टिरस गिब्बस*) गन्ने में नुकसान पहुंचाती हैं।
- ये कीट गन्ने की लीफशीथ तथा गन्ना गोफ से रस चूसते है।
- अत्यधिक प्रकोप के समय पूरी फसल पीली पड़ जाती है तथा बढ़वार रुक जाती है।

प्रबंधन

- कीट नाशी रसायन जैसे इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस एल 125 मिली / हे. का छिड़काव 600 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- अँड परजीवी *यूमायक्रोसोमा* को खेतों में छोड़ा जा सकता है।

7. थ्रिप्स (*फलमेकिओला सेराटा*)

लक्षण / पहचान

- गर्मी के महीनों में गन्ना गोफ में पाये जाने वाला कीट है।
- यदि पौधों को हथेली पर हिलाया जाय तो नौकाकार छोटे–छोटे कीट हथेली पर दिखाई देते हैं।
- पत्तियों में एक प्रकार की विशेष लहर दिखाई देती है जिसके आधार पर ग्रसित पौधों को आसानी से पहचाना जा सकता है।

प्रबंधन

- गर्मी के महीनो में सिंचाई का उचित प्रबंध करें।
- कीटनाशी रसायन जैसे इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस एल @ 125 मिली / हे. का छिड़काव 600 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- प्रतिरोधी प्रजातियाँ बोएँ।

प्रकाशक :
निदेशक : ए.डी. पाठक
संकलन एवं संपादन :
डा. ए.के. साह, डा. महाराम सिंह, डा. अरूण बैठा एवं डा. बरसाती लाल

भकृअनुप–भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान
रायबरेली रोड, दिलकुशा पोस्ट, लखनऊ– 226002 (यू.पी.)
Phone: 0522-2480726 Fax no. 0522-2480738
Email: director.sugarcane@icar.gov.in, training.iisr@icar.gov.in,

प्रसार साहित्य : 2018 / 01

गन्ना फसल से रस चूसने वाले प्रमुख कीट व उनका प्रबन्धन

भाकृअनुप ICAR
भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ ISO 9001 : 2015
भाकृअनुप–भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान
रायबरेली रोड, दिलकुशा पोस्ट
लखनऊ

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

150 YEARS OF CELEBRATING THE MAHATMA

हर कदम, हर डगर किसानों का हमसफर
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद
Agrisearch with a human touch

1. पायरिला (*पायरिला परपुसिला*)

लक्षण / पहचान

- पायरीला के शिशु (निम्फ) तथा वयस्क दोनों ही पत्तियों की निचली सतह या पौधों के मुलायम भाग से रस चूसते हैं तथा हनी ड्यू के रूप में मीठे तरल पदार्थ का उत्सर्जन करते हैं जो निचली पत्तियों की ऊपरी सतह पर गिरता है इससे पत्तियों की ऊपरी सतह चिपचिपी हो जाती है। यदि इन अवस्थाओं पर ध्यान न दिया जाए तो ग्रस्त पत्तियों के ऊपर काले रंग की फफूंदी विकसित हो जाती है जिससे प्रकाश संश्लेषण की क्रिया बाधित होती है और पत्तियाँ पीली पड़ने लगती हैं।
- वयस्क कीट : भूरे रंग के होते हैं जिनके मुखांक चोंच की तरह आगे की ओर निकले रहते हैं। मादा कीट नर कीट से आकार में बड़ी होती है और उसके उदरांत पर सफेद रंग के रोये होते हैं जिनसे वो अपने अंडे को ढकती हैं।
- अंडा : मादा कीट हल्के हरे रंग के अंडे पत्तियों की निचली सतह पर मध्य सिरा के समानांतर देती है तथा उन्हें उदरान्त स्थित सफेद रोयों से ढ़क देती है जिससे अंड समूह सफेद रूई की फाबे की तरह दिखाई देते हैं।
- शिशु : गुलाबी सफेद रंग के होते हैं इनके शरीर पर सफेद चूर्णनुमा पर्त होती है। उदरांत से दो पूँछनुमा रचना निकली रहती है। इनकी आँखें लाल रंग की होती हैं, ये भी सामान्यतः पत्ते की निचली सतह पर रहते हैं।
- आक्रमण फरवरी–नवम्बर तक होता है।

प्रबंधन

- गर्मी के महीनों मे फरवरी से लेकर जून तक जिन पत्तियों पर अँड समूह लगे हों उन्हे निकालकर एक निश्चित अंतराल पर नष्ट करते रहें।
- यदि जुलाई–अगस्त के महीने में आक्रमण अधिक हो तो कुछ कीटनाशी रसायन जैसे क्वीनॉलफोस 25 ई.सी. का 1.0–1.2 लीटर को 500 लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें।
- जुलाई– अगस्त में खेत में निगरानी करते हुए देखें की इसके निम्फ व वयस्क परजीवी कीट *इपिरिकेनिया मेलानोल्यूका* की उपस्थिति है या नहीं। यदि न हो तो 4000–5000 कोकून तथा 4–5 लाख अंडे बहुतायत वाले स्थानो से ला कर प्रति हेक्टेयर की दर से खेतों मे छोड़े।
- यदि परजीवी कीट खेतो में उपस्थित हो तो कीटनाशी रसायन प्रयोग न करें।

2. शल्क कीट (*मिलानोएस्पिस ग्लोमेराटा*)

लक्षण / पहचान

- यह गन्ने की पोरी पर चेचक की तरह दिखाई देता है। मादा कीट गन्ने पर स्थिर होकर रस चूसती है तथा अपने ऊपर एक आवरण बना लेती है जिसे शल्क कहते है।
- इस कीट की कई प्रजातियाँ गन्ने को प्रभावित करती हैं परंतु इनमें से *मिलानोएस्पिस ग्लोमेराटा* बहुतायत में गन्ने पर पाया जाता है।

प्रबंधन

- बीज के लिए ऐसे खेत एवं गन्ना टुकड़ों का चयन करें जिसमें इस कीट का प्रकोप न हो।
- भाकृअनुप–भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान द्वारा विकसित शल्क कीट की प्रबन्धन प्रणाली को अपनायें।
- इस कीट के परजीवियों का संरक्षण करें। जब परजीबी कीटों की सक्रियता खेतों में अधिक हो तो कीटनाशी रसायनों का प्रयोग न करें।
- प्रतिरोधी प्रजातियों को अपनायें।

3. सफेद मक्खी (*एल्यूरोलोबस बैरोडेन्सिस*)

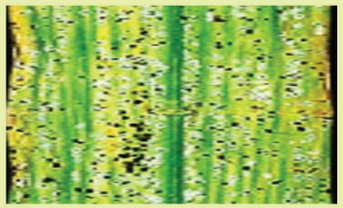

- गन्ने में मुख्य रूप से तीन मक्खियाँ (*एल्यूरोलोबस बैरोडेन्सिस, निऊमोस्क्लिया बरजई* और *निऊमोस्क्लिया एंड्रोपगोनी*) गन्ने की पत्तियों की निचली सतह से रस चूसती है। *अलूरोलोबस बैरोडेन्सिस* निचली सतह पर काले सफेद धब्बों के रूप में दिखाई देते हैं।
- प्रभावित पौधे की पत्तियाँ पीली पड़कर सूख जाती हैं।
- प्रकोप के लक्षण अगस्त–सितम्बर माह में स्पष्ट दिखाई देते हैं।
- इसके द्वारा प्रभावित पौधों की बढ़वार रुक जाती है साथ–साथ गुड़ तथा चीनी का परता भी कम हो जाता है।

प्रबंधन

- बोने की लिए स्वस्थ गन्ना बीज का चयन करें।
- खेतों में बरसात के पानी के निकास का उचित प्रबंध करें।
- इमिडाक्लोप्रिड (17.8 एस एल) 500–600 मिली./हे. की दर से 1000 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- परजीवी कीटों का संरक्षण करें।
- प्रतिरोधी प्रजातियों को अपनायें।

4. वूली एफिड (*सिरेटोवेकुना लेनीजेरा*)

लक्षण / पहचान

- इस कीट की दो अवस्थाएँ होती है, क्रॉलर तथा सेटलर।
- क्रॉलर अवस्था : इस कीट का रंग हरा होता है व आकार में एफिड की तरह होता है।
- सेटलेर अवस्था : कीट पत्तियों की निचली सतह पर स्थिर हो कर रस चूसते हैं और अपने शरीर पर मोमी चूर्ण विकसित कर लेते है जिसे वूली कहते हैं।
- शिशु तथा प्रौढ़ दोनों ही पत्तियों का रस चूसते हैं।
- अत्यधिक प्रकोप के समय ऐसा प्रतीत होता है कि फसल के उपर धुंध सी छाई हो और पत्तियों की ऊपरी सतह पर मोमी चूर्ण जमा रहता है कभी–कभी यह चूर्ण भूमि सतह पर भी दिखाई देता है। इस कीट के प्रकोप से फसल पीली पड़ने लगती है तथा बढ़वार रुक जाती है। चीनी के परता व पैदावार में गिरावट आ जाती है।
- सामान्यतः इस कीट का प्रकोप नवम्बर –दिसम्बर में होता है।

प्रबंधन

- तीव्र प्रकोप की अवस्था में कीट से निजात पाने के लिए अन्तः प्रवाही कीट नाशी रसायन जैसे इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एस एल 500–600 मिली / हे. का 1000 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- *डीफा एफिडिवोरा* 1000 व्यस्क / हे. की दर से 15 दिनों के अंतराल पर फसल में छोड़ें या अन्य परभक्षी कीट *माइक्रोमस इगोरोटस* के 2000 वयस्क / हेक्टयर छोड़े।
- जहां पर इस कीट का प्रकोप बहुत अधिक हो, वहाँ कटाई के बाद फसलों के अवशेषों को निकाल कर नष्ट कर दें।
- कीट प्रतिरोधी प्रजातियों का चयन करें।